SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

महिला मजदुरों की कृषि में भुमिका एवं उनके आर्थिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन (विशेष : दुर्ग जिले के धमधा विकासखण्ड के संदर्भ में)

शंकर लाल पटेल, शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग
अर्चना सेठी, (Ph.D.), अर्थशास्त्र विभाग
पंडित रविशंकर, विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
शंकर लाल पटेल, शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग
अर्चना सेठी, (Ph.D.),
पंडित रवि शंकर, विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 22/01/2021
Revised on : -----
Accepted on : 01/02/2021
Plagiarism : 00% on 22/01/2021

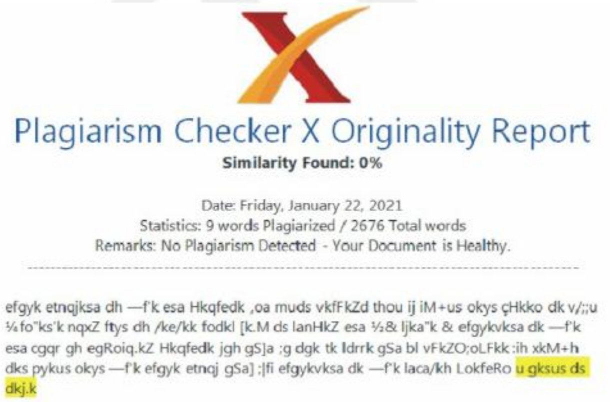
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Friday, January 22, 2021
Statistics: 9 words Plagiarized / 2676 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

efgyk etnqjksa dh —f'k esa Hkqfedk ,oa muds vkfFkZd thou ij iM+us okys çHkko dk v/;;u ¼fo"ks'k nqxZ ftys dh /ke/kk fodkl [k.M ds lanHkZ esa ½& ljka"k & efgykvksa dk —f'k esa cgqr gh egRoiq.kZ Hkqfedk jgh gS]a ;g dgk tk ldrrk gSa bl vFkZO;oLFkk :ih xkM+h dks pykus okys —f'k efgyk etnqj gSa] ;|fi efgykvksa dk —f'k laca/kh LokfeRo u gksus ds dkj.k

शोध सार

महिलाओं का कृषि में बहुत ही महत्वपुर्ण भुमिका हैं। यह कहा जा सकता हैं कि इस अर्थव्यवस्था रूपी गाड़ी को चलाने वाले कृषि महिला मजदुर हैं। यद्यपि महिलाओं का कृषि संबंधी स्वामित्व न होने के कारण महिलाओं के कार्य को न के बराबर समझा जाता हैं। 2011 के अनुसार कुल महिला कामगारों में से 65 प्रतिशत महिलाए कृषि कार्य करती है। देश में कुल किसानो का 118.7 करोड़ में से 30.3 करोड़ महिलाओं का हैं जिसमें महिला कृषि श्रमिकों का भागीदारी 55.21 प्रतिशत हैं। यह अध्ययन दुर्ग जिले के धमधा विकास खण्ड के संदर्भ में हैं। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य महिला मजदुर की कृषि कार्य करने वाली परिवार का अध्ययन, आर्थिक, महिला मजदुरों की कृषि में भागीदारी तथा जीवन का रोजगार का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में यह पाया गया कि महिलाए, पुरूषों की अपेक्षा अधिक योगदान दे रही हैं। अतः खिलोराकला और कन्हारपुरी और करेली के महिलाओं का योगदान अद्वितिय हैं। वहाँ महिलाए निंदाई, मिंजाई, कटाई तथा बीजरोपरण एवं सब्जी उत्पादन में बहुत महत्वपुर्ण भुमिका निभा रही हैं। इन कृषि कार्य करने वाली मजदुर महिलाओ के परिवार के आय में वृद्धि के साथ–साथ आर्थिक स्थिति में सुधार हुई हैं, जिसके कारण महिलाओं में अपने आत्मसम्मान, परिवार तथा बच्चों की शिक्षा की स्थिति में सुधार हुई हैं। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र मे कृषि महिला मजदुरों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति सुदृढ़ हुई है।

मुख्य शब्द

महिला मजदुर, सामाजिक, आर्थिक स्थिति, कृषि, शैक्षणिक स्थिति।

प्रस्तावना

कृषि हमारे जीवकोपार्जन का साधन ही नही बल्कि हमारे पूरे अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। ऐसा माना जाता है कि, अधिकांश उद्योग–धंधे कृषि पर आधारित हैं जो हमारे अर्थव्यवस्था का संचालन करती हैं। जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ तो इसके बाद 1951–1956 प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि को ही सर्वप्रथम स्थान दिया गया हमारे कृषि में उन्नति करने के लिए 1969 में हरित क्रांति को महत्व दिया ताकि उत्पादन में वृद्धि हो सके।

प्राचीन भारत में महिला को दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती तीनो देवियों के रूप में माना जाता हैं, जो कि धनशक्ति व लाभ का भण्डार हैं, ऐसा इसलिए कहा जाता हैं क्योकि जहाँ नारियों की पूजा होती हैं वहाँ देवता निवास करते हैं।

मनुस्मृति
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः
यत्रतास्त्रु न पूज्यन्ते, सर्वास्त त्रायता क्रियाः

भारतीय अर्थ व्यवस्था में महिला मजदुरो का अत्याधिक महत्व हैं। हमारे देश का राष्ट्रीय उत्पाद महिला कृषि मजदुरों के बदौलत ही उत्पादित होती हैं। उत्पादन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं को रेखाकिंत करने योग्य योगदान हैं, बात चाहे कृषि या ग्रामीण रोजगार की करें, या फिर चाहे हम बात महानगरों में ढॉचे की निर्माण की करें। महिला मजदुर अपने खुन पसीने की मेहनत से देश की आर्थिक उन्नति में अपना योग दान दे रही हैं। देश की कुल आबादी में आधा हिस्सा महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। महिलाओं की प्रतिभागिता उसकी कार्य करने की शक्ति, अपने परिवार का दायित्व साथ–साथ समाज में आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में महिलाओं के जो भागीदारी अतुलनीय हैं। भारत में 60 प्रतिशत महिला कृषि क्षेत्र में या खेतो पर कार्य करती हैं जिससे गरीबी कम करने, परिवार के आय बढ़ाने मे में महिलाऐं संलग्न होकर अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दिखाई हैं। विश्व खाद्य कृषि संगठन के अनुसार भारतीय कृषि में योगदान 32 प्रतिशत हैं। कृषि में महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार देना चाहिए कृषि मजदुरों को सिर्फ मजदूर ही न समझे बल्कि कृषि में महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार देना चाहिए। दुर्ग जिले में कृषि महिलाओं का कार्य मे महत्वपूर्ण स्थान हैं व उनका कृषि में सर्वाधिक योगदान हैं।

महिला मजदुरो से तात्पर्य उस श्रम से हैं जिसे महिलाओं के द्वारा संपादित किया जाता हैं।

उद्देश्य

उद्देश्य निम्न प्रकार का हैं:

1. महिला मजदूरों की कृषि कार्य करने वाले परिवार का अध्ययन ।
2. महिला मजदूरों की कृषि कार्य करने से आर्थिक जीवन स्तर में वृद्धि का अध्ययन।
3. महिला मजदूरों की कृषि में भागीदारी का तथा रोजगाार का अध्ययन ।

परिकल्पना

निम्नलिखित परिकल्पना परिकल्पित की गईः

1. महिला मजदूरों की कृषि में भूमिका हैं।
2. महिला मजदूरों की कृषि में कार्य करने से भी जीवन स्तर में सुधार नही देखी गई ।

शोध प्रविधि

शोध प्रविधि दो भागों में विभक्त हैं:

1. आंकड़ो का संकलन

शोध प्रविधि में धमधा विकासखंड का भौगोलिक आधार पर प्रतिनिधित्व करते हुए न्यादर्श के दृष्टि से तीन गाँवों को चयनित किया गया हैं। धमधा विकासखंड कृषि उत्पादन में महिला कृषि मजदूरों का सरहानीय योगदान हैं।

धमधा विकासखंड के तीन गाँवों जो अध्ययन हेतु चयनित किया गया हैं:

1. खिलोराकला
2. कन्हारपुरी
3. करेली

धमधा विकासखंड

क्रमांक	गाँवों का नाम	पुरूष उत्तरदाता	महिला उत्तरदाता	योग
1.	खिलोराकला	15	15	30
2.	कन्हारपुरी	15	15	30
3.	करेली	15	15	30
	योग	**45**	**45**	**90**

(स्त्रोत : प्राथमिक समंक)

दैव निर्देशन प्रद्धति के आधार पर धमधा विकासखंड के तीन गाँवों का अध्ययन हेतु चयन किया गया जिसमें एक गाँवों का अध्ययन हेतु 15–15 पुरूष एवं 15–15 कृषि महिलाओं मजदूरों का अध्ययन हेतु चयनित किया गया हैं। इस प्रकार कुल न्यादर्श तीन गाँवों के कृषि महिला एवं पुरूषों 45–45 बराबर 90 न्यादर्श का चयनित किया गया। प्राथमिक आंकड़ो के साथ–साथ द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया हैं ।

2. आंकड़ो का विश्लेषण

आंकड़ो का विश्लेषण करने के लिए तथा शोध को तथ्यात्मक बनाने हेतु आंकड़ो का तथ्यात्मक प्रस्तुत करने के लिए तालिका, वर्गीकरण, प्रतिशत तथा मानचित्र का प्रयोग किया हैं।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

दुर्ग जिला

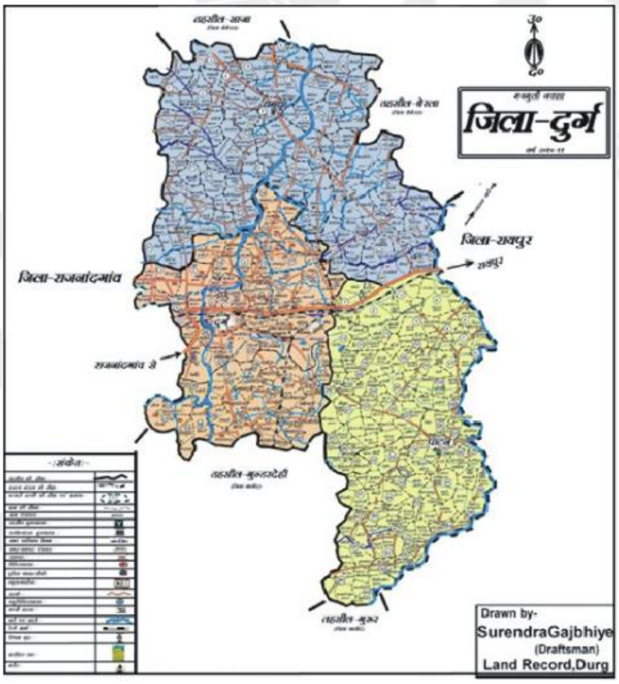

प्राचीन काल से अब तक दुर्ग जिले का इतिहास और वर्तमान अपने आप में प्राचीन मुल्यों और आधुनिकता का अद्भुत समन्वय हैं। यहाँ एक ओर तो सांस्कृतिक मूल्य गहराई से जुड़े हुए हैं तो वही उद्यमिता एवं कृषि, औद्योगिक जिले के रूप में विस्थापित हुए हैं। दुर्ग जिले का वर्तमान स्वरूप 2012 से हैं। दुर्ग जिले का क्षेत्रफल 2319.99 वर्ग कि.मी. दुर्ग जिले का भौगोलिक स्थिति अक्षांश 20´54^0 नार्थ टू 21´32^0 देशान्तर 81´10^0 ईस्ट टू 81´36^0

ईस्ट देशान्तर स्थित हैं। दुर्ग जिले का कुल जनसंख्या 1721948, दस वर्षीय जनसंख्या वृद्धि (2001–2011) 14.56, महिला–पुरूष अनुपात 966, अनु.जाति की संख्या 245587, अनु.जाति का कुल जनसंख्या का प्रतिशत 5.87, कुल साक्षर 72.47, दुर्ग जिले में कुल ग्राम 388, आबाद ग्राम 384, ग्राम पंचायत 297, जनपद पंचायत 297, जनपद पंचयत 3, नगर निगम 3, नगर पालिका 3, नगर पंचायत 3, तहसील 3 दुर्ग, धमधा एवं पाटन।

चयनित विकासखंड का अध्ययन

धमधा विकासखंड

धमधा नगर का नामकरण कबीर साहेब के धर्मगुरू धर्मदास के नाम पर धर्मदा हुआ था, उसके पश्चात् धमदा हुआ, उसको पुनः बोल चाल में धमदा से धमधा हुआ। सन् 1921 में गाजीटेरियल में प्रकाशित उल्लेख के अनुसार इसे धर्मगढ़ भी कहा जाता हैं। धमधा नगर में दुर्ग जिला हिन्दी साहित्य समिति का प्रथम अधिवेशन दिनांक 26 अप्रेल 1958 को हुआ था, जिसके सभापति केदारनाथ झा चन्द्रा जी थे।

धमधा विकासखंड भौगोलिक क्षेत्रफल 882.54 वर्ग कि.मी. में अक्षांश 20.54^0 नार्थ टू $21'32^0$ नार्थ देशान्तर $81'10^0$ ईस्ट टू $81'36^0$ ईस्ट पर स्थित हैं। कुल ग्राम 162, आबाद ग्राम 162, ग्राम पंचायत 116, जनपद पंचायत 1, नगर निगम 0, नगर पालिका 0, नगर पंचायत 1, कुल जनसंख्या 269990, दस वर्षीय जनसंख्या वृद्धि 21.02, स्त्री पुरूष अनुपात 993, अनु.जाति का कुल जनसंख्या से प्रतिशत 9.09, अनु.जन जाति का प्रतिशत 5.39, कुल साक्षरता 63.74, प्रतिशत पुरूष 135480, स्त्री 134510, जनसंख्या घनत्व 306, लिंगानुपात प्रति हजार पुरूषों पर स्थितियो 993 हैं।

धमधा विकासखण्ड

(स्त्रोत : जिला पंचायत वेबसाइड दुर्ग)

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

मेरे द्वारा निम्न शोध साहित्य का अध्ययन किया गया हैं:

1. **मुदगिल कुमार पधुम्न, 2004** प्रस्तुत शोध प्रबंध में ''कृषि पर आधारित महिला श्रमिको का परिवारिक संगठन का एक समाज शास्त्रीय अध्ययन'' से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि सामाजिक, आर्थिक से संबंधित अध्ययन किया हैं। अध्ययन से यह तथ्य प्राप्त हुआ कि निदर्शन के आधार पर कृषि आधारित महिलाओं का 300 सूचनादाताओं को चयनित किया गया हैं। महिला श्रमिको परिवारिक अध्ययन में नीति– निर्धारण तथा महिलाओं से जुड़े विभिन्न समस्याओं अध्ययन में सहयोग प्रदान करेगा ।
2. **श्रीवास्तव नमिता, 2010** प्रस्तुत शोध में ''भारतीय कृषि में महिला कृषि मजदूरों की भुमिका एवं उसका जीवन स्तर प्रभाव का अध्ययन विशेष जैनपुर के ग्रामीण क्षेत्रों का विशेष अध्ययन'' से उपर्युक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता हैं कि घर की मुखियां महिला होती हैं तथा वह पुरूषों की तुलना में कम जानकारी वाले

होती जिसके कारण कृषि से संबंधित सभी कार्य महिलाओ द्वारा ही जाती हैं। कृषि में आधुनिकता नव प्रवर्तक के कारण महिलाओं की जो भागीदारीं हैं बढ़ गयी, वह सामाजिक आर्थिक स्थिति के साथ–साथ परिवार के आय बढ़ाने मे सफल रही है।

3. **सुनीता चौहान, 2016** प्रस्तुत शोध अध्ययन भारत में ''महिला श्रमिक की आर्थिक स्थिति का विश्लेषात्मक अध्ययन'' शोध प्रबंध से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि भारत देश की 90 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती हैं। मुख्य व्यवसाय कृषि होने के कारण अधिकतर महिला श्रमिक कृषि कार्यो में लगी रहती हैं। अध्ययन से यह देखने को मिला सरकार ने महिला श्रमिको को समान, वेतनमान, कार्य के घण्टे समान मातृत्व हित योग में आदि योजनाऐं सरकार के द्वारा दी जा रही हैं। इन महिला श्रमिको के अड़चनों को समाप्त कर महिला श्रमिकों को शिक्षित होना पड़ेगा। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य महिला श्रमिको की स्थिति का अध्ययन तथा भारत में महिला श्रमिको के उत्थान के लिए सरकार के नीतियों की भुमिका का विश्लेषण करना। प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक समंको का प्रयोग किये गये हैं। भारत में आज महिलाओं के शिक्षा पर ध्यान न देने कारण महिला श्रमिक के रूप में सामने आयी हैं।
4. **सिंह ज्योत्सना एवं कुंवर निलिमा, 2018** प्रस्तुत शोध प्रबंध ''कामकाजी एवं घरेलु महिलाओं में पोषक तत्वों का स्वास्थ्य एवं योग से संबंध विशेष गोरखपुर जिले के सन्दर्भ में'' प्रस्तुत शोध अध्ययन में दिया गया कि यहाँ अध्ययन गोरखपुर जिले के कामकाजी एवं घरेलु महिलाओं पर अध्ययन किया हैं। इसमे 300 महिलाओं का चयन किया गया हैं। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य घरेलु एवं कामकाजी महिलाओं में पोषण स्वास्थ्य का एवं योग का अध्ययन करना हैं। अतः इस शोध से निष्कर्ष निकलता हैं कि महिलाऐं अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत थी तथा महिलाऐं अपने स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए पौष्टिक भोजन करती थी। छुट्टी के दिनों में शाम के समय योग करती थी ताकि महिलाऐ हमेशा स्वस्थ रहे।
5. **अंजू, 2018** प्रस्तुत शोध कृषि में महिलाओं एवं संहभागिता से यह निष्कर्ष प्राप्त होते हैं कि श्रमिक मजदूरों कृषि कार्य मे तो सहभागिता निभाती हैं साथ–साथ व घरों देख–रेख बच्चों का पालन–पोषण, मछली, पशुपालन आदि कार्य में महिलायें संलग्न हैं।
6. **राष्ट्रीय महिला नीति, 2016** राष्ट्रीय महिला नीति 2016 प्रस्तुत करती हैं, कि जिसमें महिलायें जीवन के सभी क्षेत्रो में पूरी क्षमता प्राप्त करें और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का प्रभाव डाले।
7. **मोंगिया विनिता, 2018** प्रस्तुत शोध प्रबंध ''शहरी असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की आर्थिक स्थिति का विश्लेषात्मक अध्ययन'' विशेष सतना जिले के सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता हैं कि सतना जिले के असंगठित क्षेत्र की श्रमिक महिलाओं का अध्ययन यह पाया गया कि महिलाऐ आवास निर्माण, घरेलु कामकाजी, बिड़ी बनाने, सब्जी, फल बेचने जैसे बहुत सारी काम महिलाऐं करने लगी हैं। इन कार्यरत महिलाओं की स्थिति अत्यंन्त निम्न हैं। सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ हैं कि 10 प्रतिशत महिलाऐं शिक्षित पायी गई हैं, और वह एकल परिवार की अधिक हैं। कम उम्र में शादी हो जाने के करण अधिक बच्चें, स्वास्थ्य और परिवारिक आय भी कम होती हैं एवं पुरूषो से कम मजदुरी मिलती हैं। इस प्रकार महिलाओं की स्थिति निम्न हैं। अतः सुझाव के रूप में यह कहा जी सकता हैं कि शिक्षा की व्यवस्था महिलाओं का सशक्त होना, समान परिश्रमिक मिलना चाहिए।
8. **कटारा डॉ. अंबा लाल, 2018** प्रस्तुत शोध प्रबंध ''कामकाजी महिलाओं की भुमिका एवं संघर्ष के बीच सशक्तिकरण का अधिकार राजनांदगाँव के सन्दर्भ में'' प्रस्तुत शोध अध्ययन कामकाजी महिलाऐं परिवारिक सामाजिक जीवन के विभिन्न चुनौतियों व कठिनाइयों का समाना करते उचित समय पर विभिन्न प्रकार के दायित्वों जैसेः परिवारिक, समाजिक को पूरा कर महिलाऐं जागरूकता की ओर आगे बढ़े हैं। मुख्य कार्यशील महिलाओं के भागीदारी से रोजगार में वृद्धि हुई है। दक्षिण राजस्थान में महिलाऐ मुख्य कार्यशील जनसंख्या अधिक हैं जहाँ पर कृषि सिंचाई स्व–रोजगार मे भुमिका निभायी हैं।

भारत में महिलाओं की श्रम सहभागिता की दर

तालिका 1

क्र.	वर्ष	ग्रामीण		नगरीय		योग	
		महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष
1.	1993—1994	32.8	55.3	15.5	52.1	28.3	54.4
2.	1999—2000	29.9	53.1	13.9	51.8	25.4	52.7
3.	2004—2005	32.7	54.6	16.6	54.9	28.2	54.7
4.	2007—2008	28.9	54.8	13.8	55.4	24.6	55.0
5.	2009—2010	26.1	54.7	13.8	54.3	22.5	54.6
6.	2011—2012	24.8	54.3	14.7	54.6	21.7	54.4

(स्त्रोत : राष्ट्रीय नमुना सर्वेक्षण के आंकड़े)

राष्ट्रीय नीति महिलाओं के आर्थिक भागीदारी बात कहती हैं और नीति का एक उद्देश्य अर्थव्यवस्था महिलाओं के कार्यबल में प्रोत्साहित करना और हिस्सेदारी को बढ़ाना 60 प्रतिशत से अधिक महिला मजदुर कृषि क्षेत्र में हैं और कृषि क्षेत्र में महिला मजदुर बहुत बड़ी संख्या में रोजगार प्राप्त हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में बिना वेतन की कार्य करने में महिला मजदुरो की बहुत अधिक हिस्सेदारी हैं।

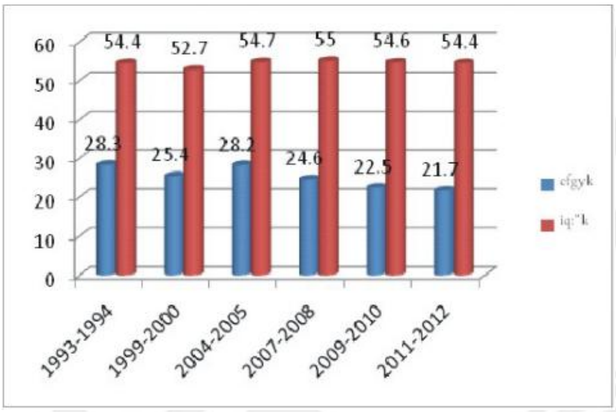

(स्त्रोत : राष्ट्रीय नमुना सर्वेक्षण के आंकड़े)

दुर्ग जिले के एवं धमधा विकासखंड कार्यशील एवं गैर कार्यशील जनसंख्या

तालिका 1.1 : मुख्य कार्यशील जनसंख्या

जिला	कृषक		खेतिहर मजदुर		परिवारिक उद्योग		अन्य कार्यशील		मुख्य कार्यशील	
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष
	53243	45576	44626	22914	8710	3299	324048	70226	430627	142015
विकासखण्ड										
दुर्ग	15724	13732	11725	5886	6228	2130	257461	57250	291138	142015
धमधा	19711	16990	18355	10469	964	524	25887	4864	64917	78998
पाटन	17808	14854	14546	6559	1518	645	40700	8112	74572	30170

स्त्रोत : जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2018—19 (संदर्भ वर्ष)

तलिका 1.2 : दुर्ग जिले और चयनित विकासखण्ड सीमांत कृषको का विवरण

जिला	कृषक		खेतिहर मजदुर		परिवारिक उद्योग		अन्यकार्य शील		सीमांत कार्यशील		कुल कार्यशील		गैर कार्यशील	
	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष
दुर्ग जिला	21336	39787	4530	8025	813	989	16495	8211	43194	56812	473821	198827	401992	646308
विख														
दुर्ग	4904	9844	864	1667	442	462	11711	6086	1792	18059	309059	97057	287538	453072
धमधा	8311	12634	1475	3492	162	182	1863	8380	9795	17120	74712	49967	80768	84543
पाटन	10141	17109	2191	2868	225	363	2921	1295	15478	21633	950	21803	73688	109688

स्त्रोत : जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2018–19 (संदर्भ वर्ष)

तालिका 1.3 : चयनित महिला मजदुरो में कृषि में भूमिका

कार्य	खिलोराकला				कन्हारपुरी				करेली				योग	
	महिला	प्रतिशत	पुरुष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत	पुरुष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत	पुरुष	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
बीज साफ करना	2	13.33	1	6.60	5	33.33	2	13.33	1	01.66	2	13.33	14	15.55
नींदाई गुढाई सिंचाई करना	7	46.46	2	13.33	5	33.33	2	13.33	7	46.46	2	13.33	25	27.27
कटाई सुखाना साफ करना	6	40.00	3	20.00	5	33.33	2	13.33	7	46.46	1	6.66	24	26.66
भुमि की तैयारी	0	0	9	60.00	0	0	9	60.00	0	0	10	66.66	27	30.00
योग	15	100.00	15	100.00	15	100.00	15	100.00	15	100.00	15	100.00	90	100.00

(सर्वेक्षण के द्वारा प्राप्त आंकड़े)

उपयुक्त तालिका से स्पष्ट होते हैं कि पुरूषो की भागीदारी सिर्फ खेत को बनाने में अधिक हैं, लेकिन महिलाओं का भागीदारी, निंदाई करना, कटाई करना सबसे अधिक हैं। इस प्रकार सिद्ध होता है कि, कृषि में महिलाओ की भुमिका अधिक महत्वपुर्ण हैं। भुमि के तैयारी ट्रैक्टर आदि के माध्यम से होने के कारण महिलाओं का योगदान नही के बराबर होते हैं।

खिलोराकला

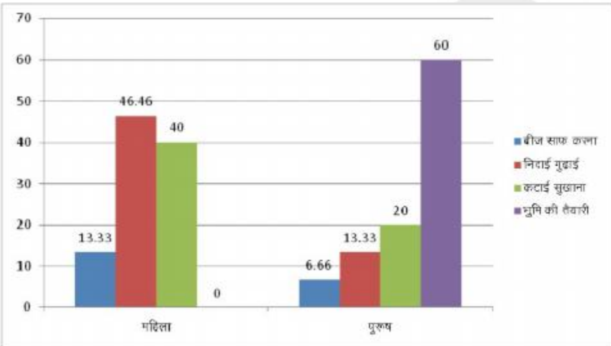

कन्हारपुरी

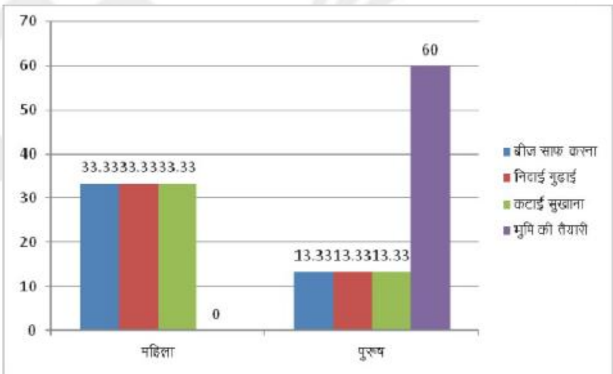

करेली

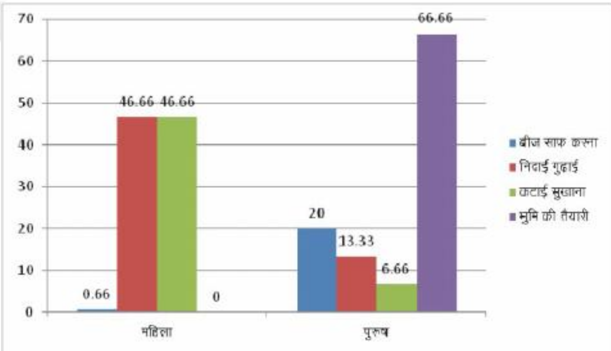

अध्ययन क्षेत्र में महिला मजदुरों की परिवारिक आय संबंधी विवरण

तालिका 1.3

क्र.	परिवार	खिलोराकला				कन्हारपुरी				करेली				योग	
		महिला		पुरूष		महिला		पुरूष		महिला		पुरूष			
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	संयुक्त	6	40	10	66.66	5	33.33	12	80	4	26.66	9	60	45	50
2.	एकांकी	9	60	5	33.33	10	66.66	3	20	11	73.33	6	40	45	50
	योग	15	100	15	100.00	15	100.00	15	100	15	100.00	15	100	90	100

(सर्वेक्षण के द्वारा प्राप्त आंकड़े)

सर्वेक्षण से स्पष्ट होता हैं कि संयुक्त परिवार महिलाओं की अपेंक्षा पुरूषों में अधिक पाया गया है, क्योकि पुरूष परिवार को बांध कर रखते हैं। एकांकी परिवार महिलाओं में अधिक पायें गये हैं, क्योकि महिलाऐं आधुनिक रहन–सहन के कारण अपने परिवार से अलग रहना पंसंद करती हैं। अतः यह साबित होता हैं कि, महिला मजदुरो में जागरूकता भावना आ गयी हैं।

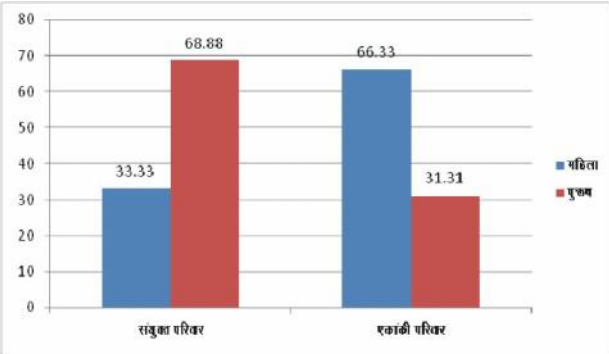

अध्ययन क्षेत्र में महिला मजदुरो की शैक्षणिक स्थिति

क्र.	शैक्षणिक स्थिति	खिलोराकला				कन्हारपुरी				करेली				योग	
		महिला		पुरूष		महिला		पुरूष		महिला		पुरूष			
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	शिक्षित	5	33.33	12	80	8	53.33	10	66.66	9	60	13	86	57	63.33
2.	अशिक्षित	10	66.66	3	20	60	46.66	5	33.33	6	40	2	13.33	33	36.66
	योग	15	100.00	15	100	15	100.00	15	100.00	15	100	15	100.00	90	100.00

(सर्वेक्षण के द्वारा प्राप्त आंकड़े)

सर्वेक्षण से स्पष्ट होता हैं कि महिलाओं का शिक्षा का स्तर पुरूषों के तुलना में कम हैं, इसका कारण यह हैं कि महिलाओं को बचपन से ही घर के कामों पर लगा दिये जाने के कारण शिक्षा पर ध्यान नही दे पाती। जो महिलाऐं शिक्षित हैं वह प्राथमिक स्तर तक ही पढ़ी हैं।

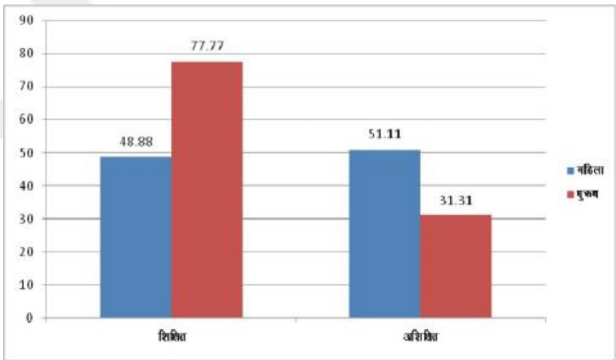

सुझाव

शोधकर्ता के द्वारा महिला मजदुरों के लिए निम्न सुझाव दिये गये हैं:

1. कृषि में महिलाओं एवं पुरूषों को साथ में मिलकर कार्य करने की जरूरत हैं।
2. महिलाओं में शिक्षा व स्वस्थ्य पर विशेष बल देना चाहिये कृषि महिलाओं को कृषि नव परिवर्तन से अवगत होने चाहिये।
3. मनरेगा जैसे नीति को लागु करना चाहियें।
4. महिलाओं को उसके कार्य का उचित वेतन दिया जाना चाहियें।
5. महिलाओं को नवीन तकनीकों के माध्यम से कृषि करना चाहिए।
6. महिला मजदुर शिक्षित होना चाहिए।
7. महिला मजदुरों को प्रशिक्षित करना चाहिये।
8. कम ब्याज पर महिला मजदुरों को बैंकों से ऋण उपलब्ध कराना चाहिए।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता हैं कि, महिला मजदुरों का योगदान अर्थव्यवस्था के लगभग सभी क्षेत्रों में हैं। भारतीय अर्थ व्यवस्था का एक बहुत बड़ा हिस्सा कृषि में आता हैं। धमधा विकास खण्ड में कृषि करने वाले ग्रामीण मजदुरों की स्थिति पहले से बेहतर हुई हैं क्योंकि महिलाओं के द्वारा जीवकोपार्जन के लिए ही नही की जाती बल्कि आय कें एक साधन के रूप भी महत्वपुर्ण भुमिका निभा रही हैं। अतः खिलाकराकला, कन्हारपुरी और करेली के महिलाओं का योगदान पुरूषों के तुलना में अधिक हैं। महिलाओं के द्वारा ही निंदाई का कार्य, कटाई का कार्य, बीज रोपण का कार्य, वानिकी का कार्य, सब्जी उत्पादन का कार्य आज किया जा रहा हैं। इस प्रकार कहा जा सकता हैं कि कृषि में महिलाओं की स्थिति पहले से बेहतर हैं। अतः कहा जा सकता हैं कि ऐसा कोई भी कार्य नही है जो महिलाऐं नही कर सकती हैं। अतः महिलाऐं श्रमिक के रूप में कृषि ही नही बल्कि सभी प्रकार के कार्य कर रही हैं। इस प्रकार महिला श्रमिको की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ हैं।

संदर्भ सूची

1. त्रिपाठी, मधुसुधन (2011) *भारत में महिला श्रमिक,* खुशी पब्लिकेशन गाजियाबाद नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, आई.एस.बी.एन. 9789388833033 पृ.नं.–1।
2. सक्सेना, जगदीश (2018), *कुरूक्षेत्र सफलता की नई कहानियॉं,* पृ.नं. 50 वर्ष 54 अंक 3 जनवरी 2018।
3. मुदगिल, पद्धुम कुमार (2004) *कृषि पर आधारित श्रमिक संगठन,* पृ.नं. 187–208।
4. श्रीवास्तव, नमिता (2010) *भारतीय कृषि में महिला श्रमिक की भुमिका उसका उसके जीवन पर प्रभाव,* पृ. नं. 174–170।
5. सिंह, ज्योत्सना एवं कुंवर, निलिमा (2018) कामकाजी एवं घरेलु महिलाओं में पोषक तत्वों का स्वास्थ्य एवं योग से संबंध, *International journal of home science* Volume-4, Issue-3, Year-2018, Page No.-218-219, Issn-2395-7476.
6. अंजु (2018) *कृषि में महिलाओं की स्थिति एवं सहभागिता* research paper valume -7 issue -6 ISSN – 2550-1991.
7. निता, एन, (2018) – राष्ट्रीय महिला आयोग 2016 कुरूक्षेत्र पे.नं. 16 वर्ष 54 अंक 3 जनवरी 2018।

8. मोंगिया, विनिता (2019) शहरीय असंगठीत क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण *International journal of Reviews Research in social science* Volume-7, Issue-3, Year-2019, Page No.-695-700, Issn-2454-2687.

9. कटारा, अम्बालाल (2019) कामकाजी महिलाओं की भुमिका संघर्ष के बीच सशक्तिकरण का अधिकारी *Sdhshauryam international Scientific Refereed Research Journal*, 12 March 2019, Volume-2, Issue-2, Page No.-39-52, Issn-2581-8306.

10. निता, एन, (2018) राष्ट्रीय महिला आयोग 2016 *कुरूक्षेत्र* पृ. नं. 19—21 वर्ष 54 अंक 3 जनवरी 2018।

11. जिला सांख्यिकीय पुस्तक 2018 दुर्ग।

12. शोध शुक्ल एवं सहाय और विरेन्द्र प्रकाश— परिणात्मक पद्धतियॉ।

13. दुर्ग गजेटेरिल।

****